लोक साहित्य का कक्षा में उपयोग

– श्रीमती मीना टम्टा

लोक में प्रचलित गीत, लोकोक्तियां, मुहावरे, पहेलियां आदि भी लोक साहित्य के अंतर्गत आते हैं। इनका उपयोग प्रतिदिन विद्यालय में कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने के लिए तथा बच्चों और विद्यालय के बीच जुड़ाव बनाने के लिए किया जा सकता है। कक्षा में लिखित सामग्री के रूप में भी लोक साहित्य का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है।

लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव। इसलिए उसमें जन–जीवन की प्रत्येक अवस्था प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक साहित्य का जो रूप कल था वह आगे भी बना रहेगा। लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नृत्य लोक साहित्य के ही अंग माने गए हैं। लोक गीत व लोक कथाओं का शिक्षा में उपयोग किया जाता रहा है। लोक में प्रचलित गीत, लोकोक्तियां, मुहावरे, पहेलियां आदि भी लोक साहित्य के अंतर्गत आते हैं। इनका उपयोग प्रतिदिन विद्यालय में कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने के लिए तथा बच्चों और विद्यालय के बीच जुड़ाव बनाने के लिए किया जा सकता है। कक्षा में लिखित सामग्री के रूप में भी लोक साहित्य का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में बच्चों के लिए एक पुस्तकालय को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। जिसमें लोक साहित्य से सम्बंधित कहानियों व कविताओं की पुस्तकों को शामिल करने का प्रयास किया गया है। इनमें– पंचतंत्र की कहानियां, खिचड़ी आदि सम्मिलित हैं। इन कहानियों को बच्चों द्वारा पढ़ा जाता है फिर बच्चों से उन पर बातचीत की जाती है। साथ ही समाज में प्रचलित विभिन्न लोक कथाओं को भी बच्चों के साथ मिलकर एकत्र कराने का प्रयास किया जा रहा है ताकि भविष्य में उन कहानियों का उपयोग कक्षा–शिक्षण को रुचिकर बनाने में किया जा सके।

लोक में प्रचलित लोकोक्तियों द्वारा भी कक्षा शिक्षण को रोचक बनाकर परिवेश से जोड़ने में मदद मिलती है।

इससे जुड़ा मेरा एक अनुभव यहां प्रस्तुत है–

वर्तमान सत्र में मेरे विद्यालय में कुल 25 विद्यार्थी नामांकित हैं। एक बार जब मैं कक्षा 3, 4 व 5 के बच्चों को विद्यालय के पुस्तकालय से इन्द्रधनुष नाम की कहानी पढ़कर सुना रही थी। कहानी सुनाने व बच्चों से बातचीत के बाद बच्चों ने कहानी की उस किताब को हमेशा की तरह खुद से पढ़ना तथा देखना चाहा। जिस पर कक्षा 4 की रिफा कहानी को कुछ रुक–रुक कर पढ़ रही थी। कक्षा 5 की नेहा ने आकर मुझ से कहा कि मैडम देखो रीफा को पढ़ना नहीं आ रहा है। जिस पर रीफा बोली, 'मैडम जी मुझे पढ़ना आता है लेकिन किताब में यहां पर थोड़ा फटा हुआ है इसलिए मेरी समझ में नहीं आ रहा था।' जिस पर नेहा ने कहा, 'नहीं मैडम, रीफा झूठ कह रही है। किताब नहीं फटी है "नाच न जाने आगन टेढ़ा। तब मैंने नेहा से कहा कि ये जो तुम बोल रही हो ये तुमने

कहां से सीखा? जिसमें नेहा ने कहा कि मैडम जी जब हमसे घर में कोई काम नहीं हो पाता है और हम मम्मी को बताते हैं। तो मम्मी इस तरह से कहती हैं। जैसे– मसाला इसलिए मोटा पिसा है क्योंकि सिलबट्टा घिस गया है। इसके उपरांत मुझे लगा कि क्यों न बच्चों से लोकोक्तियों पर बात की जाय। मैंने बच्चों को बताया कि इनको लोकोक्तियां कहते हैं। बच्चों को उस दिन अपने–अपने घर, आस–पड़ोस आदि से ऐसी लोकोक्तियां पूछकर तथा लिखकर लाने को कहा। बच्चों द्वारा निम्नलिखित लोकोक्तियां लिखकर लायी गयीं–

- बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया
- अक्ल बड़ी या भैंस।
- नाक कट गयी।
- नमक मिर्च लगाना।
- न तीन में न तेरह में।
- बाल की खाल निकालना।
- भैंस के आगे बीन बजाना।
- अंधी पीसे कुतिया चाटे।
- कौवा करे कायं–कायं, बस अपनी ही सुनायें।

इसके उपरांत बच्चों से इनके अर्थों पर बातचीत की गयी। इस प्रकार की गतिविधि के साथ ही यह भी प्रयास किया जाता रहा है कि जब भी किसी स्थानीय त्योहार के बारे में पढ़ते हैं, उसके बाद कक्षा में उस पर बातचीत की जाती है। ताकि सभी बच्चे अपने परिवेश से परिचित होते रहें। इस प्रकार जब बच्चों से उनके समाज के बीच की बात की जाती है तो बच्चे रोचकता के साथ कक्षा से जुड़ाव व अपनापन महसूस करने लगते हैं।

(लेखिका रा.प्रा.वि. टिगरी, खटीमा, उधमसिंह नगर में कार्यरत हैं।)

(अवधी गीत)

होइ गवा भोर

फुलरहिया चिरई कुड़कुड़नि,
बछिया बोली गइया रंभानि
कौनउ घर चकिया घुरघुरान,
कवनेउ घर ओखरिम परा धान।
निबिया पै चिरइन कै बटोर।
धीरै–धीरे डोली बयरि,
मान हुं गजगामिनि चली नरि।
जनु पंछिन मिस अंचरा उड़ाय
पिव को संदेश पठाय, पढाय।।
है उठत समुन्दर मा हिलोर।।
बड़का लरिका अंगिराइ उठा,
छोटका रिंरियाइ रहा ओल्ला।
आंगन मा पायल बजि रही मानहुं
बउहरि खोलिस पल्ला।
पनघट पै मचिगा मोर–तोर
मंदिर मा घंटा घनघनान,
मस्जिद मा मुल्ला दैं अजान,
गुरुद्वारन मा भा शुरू पाठ,
गिरिजाघर कै भा ठाट–बाट।
उठि रही गूंज अब चहूं ओर।।
सूरज बाबा कै आवनि सुन,
चंदा मामा घर चले गये,
मुसक्याने कंवल सरोवरमा,
वे भले गवे वे भले गये।
धरती अकास तक भा अँजोर
यहिवर चूल्हन मा आगि परा
वहिवर खेतन चलिये किसान,
स्यामा चिरई गावन लागी,
आवा बिहान आवा विहान।
चरवाहे लइ कह चले ढोर

– अशोक कुमार मिश्र 'निशंक'